ET The Economic Times हिंदी

हिंदुस्तान जिंक संसाधन विस्तार और क्रिटिकल मिनरल्स पर कर रही है फोकस : प्रिया अग्रवाल हेब्बार

Curated by ईटी हिंदी डेस्क The Economic Times Hindi • Updated: 4 Feb 2026, 4:18 pm IST

हिंदुस्तान जिंक की चेयरपर्सन प्रिया अग्रवाल हेब्बार ने कहा है कि कंपनी अन्वेषण सहयोगियों के जरिए अपने संसाधन आधार का विस्तार कर रही है और जिंक-लेड-सिल्वर से आगे क्रिटिकल मिनरल्स की दिशा में बढ़ रही है। तीसरी तिमाही में कंपनी ने अब तक का सबसे बेहतर परिचालन और वित्तीय प्रदर्शन दर्ज किया है, जिसमें रिकॉर्ड रेवेन्यू, एबिट्डा और मुनाफा शामिल है।

हिंदुस्तान जिंक की अध्यक्ष प्रिया अग्रवाल हेब्बार ने शेयरधारकों को लिखे अपने हालिया पत्र में साफ किया है कि कंपनी अब सिर्फ जिंक, लेड और चांदी तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि धीरे-धीरे महत्वपूर्ण खनिजों यानी क्रिटिकल मिनरल्स के क्षेत्र में भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उन्होंने बताया कि कंपनी अन्वेषण से जुड़ी सहयोगी इकाइयों के जरिए अपने संसाधन पदचिह्न का विस्तार कर रही है, ताकि भविष्य की औद्योगिक और ऊर्जा जरूरतों के अनुरूप खुद को तैयार किया जा सके।

प्रिया अग्रवाल हेब्बार ने इस बात पर जोर दिया कि हिंदुस्तान जिंक की पहचान हमेशा से कम लागत पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादन की रही है और तीसरी तिमाही के नतीजे इसी नेतृत्व को मजबूत करते हैं। भूमिगत खनन की ओर संक्रमण के बाद कंपनी ने अब तक की किसी भी तीसरी तिमाही में सबसे अधिक खनन आधारित धातु का उत्पादन किया है। इस दौरान 276 केटी माइनड मेटल और रिकॉर्ड 270 केटी

रिफाइंड मेटल का उत्पादन किया गया, जो परिचालन दक्षता में आए बड़े सुधार को दर्शाता है।वित्तीय मोर्चे पर भी यह तिमाही कंपनी के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुई। पहली बार किसी एक तिमाही में हिंदुस्तान जिंक का रेवेन्यू 10,000 करोड़ रुपये के पार गया और पिछली तिमाही के मुकाबले 28 प्रतिशत की बढ़त के साथ 10,980 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। एबिट्डा 55 प्रतिशत के मजबूत मार्जिन के साथ 16,087 करोड़ रुपये के अब तक के सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा, जबकि कर पश्चात मुनाफा 13,916 करोड़ रुपये रहा। यह मुनाफा तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 48 प्रतिशत और सालाना आधार पर 46 प्रतिशत अधिक है।

प्रिया अग्रवाल हेब्बार के अनुसार, ये नतीजे हिंदुस्तान जिंक के एकीकृत परिचालन मॉडल और अनुशासित प्रबंधन की ताकत को दर्शाते हैं। उन्होंने इस बात पर विशेष गर्व जताया कि कंपनी ने यह प्रदर्शन लागत नियंत्रण के साथ हासिल किया है। जिंक की उत्पादन लागत साल-दर-साल करीब 10 प्रतिशत घटकर लगभग 940 डॉलर प्रति टन रह गई है, जो वैश्विक स्तर पर सबसे कम लागतों में से एक है। उनके अनुसार, अनिश्चित वैश्विक माहौल में यह लागत अनुशासन कंपनी को मजबूती देता है।

तीसरी तिमाही में चांदी की भूमिका भी बेहद अहम रही। स्वच्छ ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स और उन्नत विनिर्माण क्षेत्रों में बढ़ती मांग के बीच चांदी की कीमतों में तेजी आई, जिसका सीधा लाभ हिंदुस्तान जिंक को मिला। कंपनी ने इस तिमाही में 158 मीट्रिक टन चांदी का उत्पादन किया और कुल मुनाफे में चांदी का योगदान बढ़कर 44 प्रतिशत तक पहुंच गया।

टेक्नोलॉजी को लेकर भी कंपनी का रुख स्पष्ट है। प्रिया अग्रवाल हेब्बार के मुताबिक, स्वचालन, रियल-टाइम मॉनिटरिंग और डेटा-आधारित निर्णयों ने खानों और स्मेल्टरों में सुरक्षा, संसाधन दक्षता और पर्यावरणीय प्रदर्शन को बेहतर बनाया है। उन्होंने कहा कि ये तकनीकें सिर्फ औजार नहीं हैं, बल्कि कर्मचारियों और समुदायों के प्रति किए गए वादों को निभाने का माध्यम भी हैं।

कुल मिलाकर, हिंदुस्तान जिंक अब खुद को एक पारंपरिक जिंक-चांदी उत्पादक से आगे बढ़ाकर मल्टी-मेटल और क्रिटिकल मिनरल्स पर केंद्रित कंपनी के रूप में स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। अस्थिर बाजार और बदलते वैश्विक हालात के बीच कंपनी ने यह दिखाया है कि स्पष्ट दृष्टि, परिचालन उत्कृष्टता और उद्देश्य आधारित रणनीति के साथ वह अगले औद्योगिक युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है।